बाइबल किसी निश्चित आयु का उल्लेख नहीं करती कि कब कोई व्यक्ति “युवा” कहलाता है। बल्कि, “युवावस्था” वह समय है जो बचपन और पूर्ण वयस्कता के बीच होता है। यह केवल उम्र की बात नहीं है, बल्कि परिपक्वता, ज़िम्मेदारी और चरित्र का प्रश्न है।

युवा वह है जो शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक रूप से बढ़ रहा है और जिसे फिर भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिए बुलाया गया है।

पवित्रशास्त्र में कई ऐसे उदाहरण हैं जहाँ परमेश्वर ने युवाओं के माध्यम से अद्भुत कार्य किए:

•इश्माएल (उत्पत्ति 21:14-20

•इसहाक (उत्पत्ति 22:5)

•यूसुफ, जो केवल सत्रह वर्ष का था जब परमेश्वर ने उसके जीवन को आकार देना आरंभ किया (उत्पत्ति 37:2; 42:22)

•राजा शाऊल, जिसे “सुन्दर और जवान” कहा गया (1 शमूएल 9:2)

•तीमुथियुस, जिसे पौलुस ने कहा कि कोई भी उसकी युवावस्था को

तुच्छ न समझे (1 तीमुथियुस 4:12)

ये उदाहरण हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में युवावस्था अयोग्यता नहीं, बल्कि उसके उद्देश्यों की पूर्ति का एक साधन है।

युवाओं से अपेक्षित बाइबिलीय गुण

1. एक युवा को प्रारम्भ से ही परमेश्वर को खोजना और उसके वचन का पालन करना चाहिए

सभोपदेशक 12:1

“अपनी युवावस्था में अपने सृष्टिकर्ता को स्मरण रख, इस से
पहले कि बुरे दिन आएँ और वे वर्ष निकट हों जब तू कहे, ‘मुझे उनमें आनंद नहीं।’”

भजन संहिता 119:9

“युवा अपनी चाल को शुद्ध कैसे रख सकता है? तेरे वचन के

अनुसार ध्यान रखकर।”

युवावस्था वह समय है जब हृदय को परमेश्वर के प्रति ढाला जा सकता है। जो आदतें इस काल में बनती हैं, वे जीवनभर असर डालती हैं। यदि कोई युवा इस समय परमेश्वर को भूल जाता है, तो पाप गहरी जड़ें जमा लेता है।

2. एक युवा को बुद्धिमान होना और दूसरों के लिए धर्मी उदाहरण बनना चाहिए

1 तीमुथियुस 4:12

“कोई तेरी युवावस्था को तुच्छ न समझे, पर तू विश्वासियों के
लिए वचन, चाल-चलन, प्रेम, विश्वास और पवित्रता में उदाहरण
बन।”

पौलुस की यह बात सिखाती है कि परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व आयु पर नहीं, चरित्र पर निर्भर करता है। युवाओं को अपने शब्दों, आचरण, और विश्वास में मसीह के समान होना चाहिए।

3. एक युवा को आत्मिक रूप से बलवान होना चाहिए ताकि वह शत्रु का सामना कर सके

नीतिवचन 20:29

“युवकों का बल उनका गौरव है, और वृद्धों का श्वेत केश उनकी शोभा।”

1 यूहन्ना 2:14

“मैं तुम्हें लिखता हूँ, हे जवानो, क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट को जीत लिया है।”

युवा शरीर से बलवान होते हैं, परंतु परमेश्वर चाहता है कि वे आत्मिक रूप से भी मज़बूत हों उसके वचन में जड़ पकड़कर शैतान के प्रलोभनों का सामना करें। जैसे यीशु ने जंगल में शैतान को शास्त्र उद्धृत करके पराजित किया (मत्ती 4:1–11), वैसे ही युवाओं को भी करना चाहिए।

4. एक युवा को पापमय इच्छाओं से भागना चाहिए

2 तीमुथियुस 2:22

“युवावस्था की अभिलाषाओं से भाग, और उन लोगों के साथ धर्म, विश्वास, प्रेम और शांति का अनुसरण कर जो शुद्ध मन से प्रभु
को पुकारते हैं।”

बाइबल चेतावनी देती है कि युवावस्था की इच्छाएँ जैसे कामुकता, अहंकार, और भोग-विलास विनाश की ओर ले जाती हैं। यूसुफ की तरह जो पोटीफर की पत्नी से भागा (उत्पत्ति 39:12), वैसे ही युवाओं को भी प्रलोभन से भागकर पवित्रता का अनुसरण करना चाहिए।

परमेश्वर की दृष्टि में युवावस्था का समय

बाइबल के अनुसार, युवावस्था लगभग बारह वर्ष की आयु से लेकर चालीस-पैंतालीस वर्ष तक हो सकती है, जब तक कि शारीरिक शक्ति घटने न लगे। लेकिन परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण यह नहीं कि कितने वर्ष बीते, बल्कि वे वर्ष कैसे बिताए गए।

भजन संहिता 90:10

“हमारे जीवन के दिन सत्तर वर्ष के होते हैं, और यदि बलवान हो तो अस्सी वर्ष के; फिर भी उनका गर्व तो केवल श्रम और दुख ही
है; वे शीघ्र बीत जाते हैं, और हम उड़ जाते हैं।”

इसलिए युवाओं को चाहिए कि वे “समय का सदुपयोग करें” (इफिसियों 5:16) और अपने जीवन को परमेश्वर की महिमा के लिए लगाएँ।

सलाह का एक वचन

युवाओं से:

यह तुम्हारा समय है विश्वास, पवित्रता और अनुशासन की नींव रखने का। इसे व्यर्थ के संसारिक कार्यों में न गँवाओ। धर्म के बीज बोओ, और तुम अपने जीवन में आशीर्वाद की फसल काटोगे (गलातियों 6:7–8)।

माता-पिता से:

तुम्हारे बच्चे सदा छोटे नहीं रहेंगे। इससे पहले कि शत्रु उन्हें भ्रष्ट करे, उन्हें प्रभु के भय में दृढ़ करो। उन्हें

उद्धार के मार्ग में प्रशिक्षित करो, और परमेश्वर वादा करता है कि वे उससे नहीं हटेंगे।

नीतिवचन 22:6

“लड़के को उसके मार्ग पर आरंभ से शिक्षा दे; वह वृद्ध होने
पर भी उससे नहीं हटेगा।”

निष्कर्ष

युवावस्था एक वरदान और ज़िम्मेदारी दोनों है। यह शक्ति, उत्साह और अवसर का समय है, परंतु साथ ही परीक्षाओं का भी समय है।

परमेश्वर हर युवा को बुलाता है कि वह उसे स्मरण रखे, उसके वचन में चले, शत्रु का सामना करे, और धर्म की खोज करे।

जब युवावस्था परमेश्वर को समर्पित होती है, तब वह उसके राज्य का शक्तिशाली साधन बन जाती है।

प्रभु हर युवा को सामर्थ दे कि वह मसीह के लिए विश्वासयोग्य

जीवन जिए, और माता-पिता को बुद्धि दे कि वे अगली पीढ़ी को उद्धार के मार्ग पर चलाएँ।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp